International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
e-ISSN :2581-9925, Impact Factor (Cosmos: 7.555 & I2OR: 5.105), Volume 08, No. 01(II), January - March, 2026, pp. 175-180

राजस्थान में इको–टूरिज्म (पारिस्थितिकी पर्यटन) – संभावनाएं, चुनौतियां और सतत विकास

डॉ. रेनू नैनावत[1] | अशोक कुमार जांगिड़[2*]

[1]सहायक आचार्य, राजकीय कन्या महाविद्यालय, कोटा, राजस्थान।
[2]शोधार्थी, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा, राजस्थान।

[*]Corresponding Author: ashokjangir1050@gmail.com

Citation: नैनावत, रेनू एवं जांगिड़, अशोक (2026). राजस्थान में इको–टूरिज्म (पारिस्थितिकी पर्यटन) – संभावनाएं, चुनौतियां और सतत विकास. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 08(01(II)), 175–180.

सार

राजस्थान, जिसे ऐतिहासिक किलों, महलों और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए विश्व स्तर पर जाना जाता है, अब इको–टूरिज्म (पारिस्थितिकी पर्यटन) के एक प्रमुख केंद्र के रूप में उभर रहा है। थार के रेगिस्तान से लेकर अरावली की प्राचीन पहाड़ियों और घने जंगलों तक, राज्य में अद्वितीय जैव विविधता पाई जाती है। यह शोध पत्र राजस्थान में इको–टूरिज्म की वर्तमान स्थिति, इसके प्रमुख स्थलों, सरकारी नीतियों (विशेष रूप से राजस्थान इको–टूरिज्म नीति 2021), और स्थानीय समुदायों पर इसके सामाजिक–आर्थिक प्रभाव का विस्तृत विश्लेषण करता है। इसके साथ ही, यह अध्ययन उन प्रमुख चुनौतियों को भी उजागर करता है जिनका सामना यह क्षेत्र कर रहा है, जैसे कि जल संकट, अति–पर्यटन और मानव–वन्यजीव संघर्ष। अंत में, यह शोध पत्र राज्य में पर्यावरण के अनुकूल और टिकाऊ पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए कुछ व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत करता है। राजस्थान के संदर्भ में, पर्यटन हमेशा से राज्य की जीडीपी का एक मुख्य आधार रहा है। ऐतिहासिक रूप से, राज्य का पर्यटन स्वर्णिम त्रिभुज (दिल्ली–आगरा–जयपुर) और हेरिटेज होटलों तक सीमित था। हालांकि, पिछले एक दशक में पर्यटकों की प्राथमिकताओं में बदलाव आया है। अब यात्री प्रकृति के करीब जाना, वन्यजीवों को उनके प्राकृतिक आवास में देखना और स्थानीय ग्रामीण जीवन शैली का अनुभव करना चाहते हैं। राजस्थान की विशिष्ट भौगोलिक संरचना जिसमें प्राचीन अरावली पर्वत शृंखला, विशाल थार मरुस्थल, घने जंगल और नदियां शामिल हैं इसे इको–टूरिज्म के लिए एक आदर्श गंतव्य बनाती है।

शब्दकोश: *इको–टूरिज्म, रेगिस्तान, सरकारी नीतियां, मानव–वन्यजीव, भौगोलिक संरचना।*

प्रस्तावना

पर्यटन उद्योग विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। भारत में, राजस्थान पर्यटन के नक्शे पर एक अग्रणी राज्य है। पारंपरिक रूप से, राजस्थान में पर्यटन मुख्य रूप से इसके किलों, महलों, हवेलियों और सांस्कृतिक मेलों तक सीमित रहा है, जिसे हेरिटेज टूरिज्म कहा जाता है। हालांकि, पिछले कुछ दशकों में पर्यटकों की प्राथमिकताओं में महत्वपूर्ण बदलाव आया है। प्रकृति के प्रति बढ़ती जागरूकता और

[*] *Copyright © 2026 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता ने इको–टूरिज्म को जन्म दिया है। इको–टूरिज्म का तात्पर्य ऐसे पर्यटन से है जो प्राकृतिक क्षेत्रों के संरक्षण में मदद करता है, स्थानीय लोगों के जीवन स्तर में सुधार लाता है, और पर्यटकों को प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनाता है। राजस्थान का विविध भूगोलकृजिसमें शुष्क रेगिस्तान, झीलें, नदियाँ और अरावली पर्वतमाला शामिल हैं इसे इको–टूरिज्म के लिए एक आदर्श गंतव्य बनाता है। राज्य में बाघ अभयारण्य, राष्ट्रीय उद्यान, और वन्यजीव अभयारण्यों की बहुतायत है, जो दुनिया भर के प्रकृति प्रेमियों को आकर्षित करते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध पत्र के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैंः

- राजस्थान में इको–टूरिज्म की वर्तमान क्षमता और भौगोलिक विविधता का दस्तावेजीकरण करना।
- राज्य के प्रमुख इको–टूरिज्म स्थलों (राष्ट्रीय उद्यानों, वन्यजीव अभयारण्यों और आर्द्र भूमियों) का विश्लेषण करना।
- स्थानीय अर्थव्यवस्था और समुदायों पर इको–टूरिज्म के प्रभावों का मूल्यांकन करना।
- अनियंत्रित पर्यटन से उत्पन्न होने वाली पर्यावरणीय चुनौतियों की पहचान करना।
- राजस्थान सरकार की इको–टूरिज्म नीतियों की समीक्षा करना और सतत विकास के लिए समाधान प्रस्तावित करना।

इको–टूरिज्म की अवधारणा और महत्व

द इंटरनेशनल इकोटूरिज्म सोसाइटी के अनुसार, इको–टूरिज्म प्राकृतिक क्षेत्रों की जिम्मेदार यात्रा है जो पर्यावरण का संरक्षण करती है, स्थानीय लोगो ं की भलाई को बनाए रखती है, और इसमें व्याख्या तथा शिक्षा शामिल होती है।

इको–टूरिज्म के मुख्य स्तंभ

- पर्यावरण संरक्षण प्राकृतिक संसाधनों, वनस्पतियों और जीवों का संरक्षण सुनिश्चित करना।
- सामुदायिक भागीदारीः पर्यटन से होने वाले आर्थिक लाभ का एक हिस्सा स्थानीय समुदायों तक पहुंचाना।
- सतत विकासः वर्तमान पर्यटन गतिविधियों को इस प्रकार संचालित करना कि वे भविष्य की पीढ़ियों के लिए प्राकृतिक संसाधनों को नष्ट न करें।
- शैक्षिक अनुभवः पर्यटकों और स्थानीय लोगों दोनों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाना।

राजस्थान जैसे राज्य में, जहां की अर्थव्यवस्था पर्यटन पर काफी हद तक निर्भर है, इको–टूरिज्म का महत्व और भी बढ़ जाता है। यह न केवल ग्रामीण क्षेत्रों मे ं रोजगार के नए अवसर पैदा करता है, बल्कि वन्यजीवों के अवैध शिकार और वनों की कटाई जैसी समस्याओं को रोकने में भी एक आर्थिक प्रोत्साहन प्रदान करता है।

राजस्थान का भौगोलिक और पारिस्थितिक परिदृश्य

राजस्थान भारत का सबसे बड़ा राज्य है, और इसकी भौगोलिक विविधता इसकी जैव विविधता का मुख्य कारण है। इसे मुख्य रूप से चार पारिस्थितिक क्षेत्रों में बांटा जा सकता है

- थार का रेगिस्तान राज्य के पश्चिमी भाग में फैला यह अत्यंत शुष्क क्षेत्र है। कठोर जलवायु के बावजूद, यहाँ अद्वितीय मरुस्थलीय वनस्पतियाँ और जीव पाए जाते हैं, जैसे कि गोडावण (Great Indian Bustard), चिंकारा, मरुस्थलीय लोमड़ी, और विभिन्न प्रकार के सरीसृप।

- अरावली पर्वतमालाः यह दुनिया की सबसे पुरानी पर्वत श्रृंखलाओं में से एक है जो राज्य को दो भागों में विभाजित करती है। अरावली के जंगल बाघों, तेंदुओं, भालुओं और अनगिनत पक्षी प्रजातियों का घर हैं।
- पूर्वी मैदानः यह क्षेत्र कृषि के लिए उपजाऊ है और यहाँ नदियाँ और झीलें पाई जाती हैं, जो प्रवासी पक्षियों के लिए महत्वपूर्ण आश्रय स्थल हैं।
- दक्षिणी–पूर्वी पठार चंबल नदी का यह बेसिन घड़ियाल, मगरमच्छ और डॉल्फिन जैसे जलीय जीवों के लिए प्रसिद्ध है।

राजस्थान में प्रमुख इको–टूरिज्म स्थल

राजस्थान में कई ऐसे स्थल हैं जो विश्व स्तर पर इको–टूरिज्म के लिए प्रसिद्ध हैं। इनमें से प्रमुख निम्नलिखित हैं

- **रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान**

सवाई माधोपुर जिले में स्थित यह उद्यान भारत में बाघों को उनके प्राकृतिक आवास में देखने के लिए सबसे अच्छी जगहों में से एक है। यह प्रोजेक्ट टाइगर के तहत शामिल है। बाघों के अलावा, यहाँ तेंदुए, सांभर, चीतल, जंगली सूअर और 300 से अधिक पक्षियों की प्रजातियां पाई जाती हैं।

- **केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान**

भरतपुर का यह उद्यान यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल और एक रामसर साइट है। यह दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण पक्षी प्रजनन और भोजन स्थलों में से एक है। सर्दियों के दौरान, यहाँ साइबेरिया और मध्य एशिया से हजारों प्रवासी पक्षी आते हैं। यह वेटलैंड इको–टूरिज्म का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

- **मरुभूमि राष्ट्रीय उद्यान**

जैसलमेर और बाड़मेर जिलों में फैला यह उद्यान थार रेगिस्तान के पारिस्थितिकी तंत्र का एक बेहतरीन उदाहरण है। यह पार्क गंभीर रूप से लुप्तप्राय राज्य पक्षी गोडावण का अंतिम प्रमुख आश्रय स्थल है। यहाँ सैंड ड्यून्स (रेत के टीले) और जीवाश्म भी पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। 5.4 सरिस्का बाघ अभयारण्य अरावली पहाड़ियों में स्थित सरिस्का इतिहास में दुनिया का पहला ऐसा रिजर्व था जहाँ बाघों को सफलतापूर्वक रिलोकेट (पुनर्स्थापित) किया गया था (रणथंभौर से)। यहाँ वन्यजीव सफारी के साथ–साथ प्रकृति ट्रेल्स भी इको–टूरिस्ट्स के बीच लोकप्रिय हैं।

- **कुम्भलगढ़ और माउंट आबू वन्यजीव अभयारण्य**
  - कुम्भलगढ़ भेड़ियों और तेंदुओं के लिए प्रसिद्ध है। यह अरावली की हरी–भरी वादियों में ट्रेकिंग और नेचर वॉक के लिए आदर्श है।
  - माउंट आबूः राजस्थान का एकमात्र हिल स्टेशन, जो अपनी विशिष्ट वनस्पतियों (ऑर्किड आदि) और स्लॉथ बीयर के लिए जाना जाता है।

- **ताल छापर अभयारण्य**

चुरू जिले का यह छोटा सा अभयारण्य काले हिरणों (Blackbucks) के लिए विश्व प्रसिद्ध है। यहाँ की घास के मैदानों की पारिस्थितिकी अद्वितीय है और यह रैप्टर्स (शिकारी पक्षियों) को देखने के लिए एक बेहतरीन जगह है।

- **चंबल सफारी**

राष्ट्रीय चंबल घड़ियाल वन्यजीव अभयारण्य इको–टूरिज्म का एक अलग ही रूप प्रस्तुत करता है। नदी सफारी के माध्यम से पर्यटक घड़ियाल, मगरमच्छ, विभिन्न प्रकार के कछुए और दुर्लभ गंगा डॉल्फिन देख सकते हैं।

राजस्थान इको–टूरिज्म नीति 2021

पर्यावरण की रक्षा करते हुए पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए, राजस्थान सरकार ने वन विभाग के तहत जुलाई 2021 में अपनी नई श्इको–टूरिज्म नीति लागू की। यह नीति अगले 10 वर्षों के लिए तैयार की गई है।

नीति के मुख्य उद्देश्य और रणनीतियां

- वन्यजीव और प्रकृति का संरक्षणः यह नीति सुनिश्चित करती है कि पर्यटन से वन्यजीवों के प्राकृतिक आवास में कोई बाधा उत्पन्न न हो। कैरिंग कैपेसिटी के सिद्धांत को सख्ती से लागू करना।
- ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बढ़ावाः इको–टूरिज्म के माध्यम से स्थानीय लोगों के लिए आजीविका के साधन पैदा करना। इसमें नेचर गाइड, होमस्टे, हस्तशिल्प बिक्री और स्थानीय भोजन के अवसर शामिल हैं।
- निजी निवेश को प्रोत्साहनः सरकार इको–टूरिज्म पार्कों के विकास में निजी क्षेत्र की भागीदारी को प्रोत्साहित कर रही है।
- पारिस्थितिक जागरूकताः पर्यटकों और स्कूली बच्चों के लिए प्रकृति शिविरऔर ट्रेकिंग रूट्स विकसित करना।
- नॉन–मोटराइज्ड वनों के अंदर प्रदूषण कम करने के लिए साइकिलिंग, ई–वाहन और पैदल यात्रा को बढ़ावा देना।

स्थानीय समुदायों पर प्रभाव और उनकी भूमिका

इको–टूरिज्म का सबसे महत्वपूर्ण पहलू समुदाय की भागीदारी है। राजस्थान में इसका गहरा प्रभाव देखा जा सकता है

- बिश्नोई समुदाय का उदाहरण जोधपुर के पास बिश्नोई गांव इको–टूरिज्म का एक जीवंत उदाहरण हैं। यह समुदाय सदियों से प्रकृति और वन्यजीवों (विशेषकर खेजड़ी के पेड़ और काले हिरण) के संरक्षण के लिए जाना जाता है। पर्यटक यहाँ आकर इस समुदाय की पर्यावरण–अनुकूल जीवन शैली को देखते हैं, जिससे ग्रामीणों को आय प्राप्त होती है।
- होमस्टे और सांस्कृतिक आदान–प्रदानरू ग्रामीण इलाकों में होमस्टे की अवधारणा ने स्थानीय लोगों को सीधे पर्यटन अर्थव्यवस्था से जोड़ा है। इससे वे अपने पारंपरिक ज्ञान, भोजन और संस्कृति को पर्यटकों के साथ साझा कर पाते हैं।
- वन रक्षक और गाइड के रूप में रोजगार कई स्थानीय युवा जो पहले शिकार या लकड़ी काटने जैसी अवैध गतिविधियों में शामिल हो सकते थे, अब वन विभाग द्वारा प्रशिक्षित नेचर गाइड और वन रक्षक बन गए हैं। वे अब जंगलों के रक्षक हैं क्योंकि उनका रोजगार वनों के अस्तित्व पर निर्भर है।
- महिला सशक्तिकरण इको–टूरिज्म ने ग्रामीण महिलाओं को हस्तशिल्प, बुनाई और सिलाई के माध्यम से आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाने में मदद की है।

राजस्थान में इको–टूरिज्म के समक्ष प्रमुख चुनौतियां

हालांकि राजस्थान में इको–टूरिज्म की अपार संभावनाएं हैं, लेकिन इसके विकास के मार्ग में कई गंभीर चुनौतियां भी हैं

- **अति–पर्यटन और वहन क्षमता**

रणथंभौर और सरिस्का जैसे प्रमुख राष्ट्रीय उद्यानों में पर्यटकों की भारी भीड़ एक बड़ी समस्या बन गई है। बहुत अधिक वाहनों का प्रवेश, शोरगुल और प्रदूषण वन्यजीवों के प्राकृतिक व्यवहार (प्रजनन, शिकार) को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। वहन क्षमता की अक्सर अनदेखी की जाती है।

- **जल संकट**

राजस्थान भारत का सबसे शुष्क राज्य है। पर्यटकों की आमद से स्थानीय जल संसाधनों पर भारी दबाव पड़ता है। बड़े रिसॉर्ट्स और होटलों द्वारा पानी का अत्यधिक दोहन स्थानीय समुदायों के लिए पीने के पानी का संकट पैदा कर सकता है।

- **मानव–वन्यजीव संघर्ष**

जंगलों के सिकुड़ने और पर्यटन बस्तियों के बढ़ने से वन्यजीव अक्सर मानव बस्तियों में प्रवेश कर जाते हैं। तेंदुओं और बाघों द्वारा मवेशियों का शिकार किए जाने की घटनाएं आम हैं, जिससे स्थानीय लोगों में असंतोष पैदा होता है और कभी–कभी वे प्रतिशोध में वन्यजीवों को नुकसान पहुंचाते हैं।

- **कमर्शियलाइजेशन और ग्रीनवॉशिंग**

कई होटल और रिजॉर्ट केवल नाम के लिए खुद को 'इको–फ्रेंडली' बताते हैं, जबकि उनका संचालन पर्यावरण के अनुकूल नहीं होता (इसे ग्रीनवॉशिंग कहा जाता है)। कंक्रीट के बड़े निर्माण, प्लास्टिक का उपयोग और अपशिष्ट प्रबंधन की उचित व्यवस्था का अभाव इको–टूरिज्म की मूल भावना को नष्ट करता है।

- **जलवायु परिवर्तन**

अनियमित वर्षा, बढ़ता तापमान और लंबे समय तक रहने वाला सूखा राजस्थान के नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र को खतरे में डाल रहा है। यह सीधे तौर पर झीलों (जैसे केवलादेव) के सूखने और वनस्पतियों के नष्ट होने का कारण बन रहा है, जिससे पर्यटन प्रभावित होता है।

सुझाव और समाधान

इन चुनौतियों से निपटने और राजस्थान में इको–टूरिज्म को वास्तव में टिकाऊ बनाने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए जाने चाहिएः

- कठोर नियमन और निगरानी वन क्षेत्रों में रिसॉर्ट्स के निर्माण के लिए सख्त नियम होने चाहिए। प्रत्येक इको–टूरिज्म स्थल की 'वहन क्षमता का कड़ाई से पालन किया जाना चाहिए, और प्रवेश करने वाले पर्यटकों की संख्या सीमित होनी चाहिए।
- नवीकरणीय ऊर्जा और अपशिष्ट प्रबंधनरू पर्यटन इकाइयों के लिए सौर ऊर्जाका उपयोग, वर्षा जल संचयन और शून्य–कचरा नीति को अनिवार्य बनाया जाना चाहिए। सिंगल–यूज प्लास्टिक को वन्यजीव क्षेत्रों में पूरी तरह से प्रतिबंधित किया जाना चाहिए।
- वैकल्पिक गंतव्यों का विकासः रणथंभौर जैसे अति–व्यस्त पार्कों से दबाव कम करने के लिए जवाई (तेंदुओं के लिए), झालाना (Jhalana), और मुकंदरा हिल्स जैसे कम ज्ञात स्थलों को इको–टूरिज्म हब के रूप में विकसित और प्रचारित किया जाना चाहिए।
- प्रमाणन प्रणाली सरकार को ऐसे होटलों और टूर ऑपरेटरों के लिए एक प्रामाणिक इको–सर्टिफिकेशन शुरू करना चाहिए जो वास्तव मे ं पर्यावरण–अनुकूल प्रथाओं का पालन करते हैं।
- सामुदायिक लाभ साझाकरण पर्यटन से होने वाली आय का एक निश्चित प्रतिशत (कम से कम 20–30%) सीधे स्थानीय ग्राम पंचायतों या ईको–विकास समितियों को जाना चाहिए, ताकि वे संरक्षण और गांव के विकास में इसका उपयोग कर सकें।
- शिक्षा और जागरूकताः पर्यटकों को संवेदनशील बनाने के लिए व्याख्या केंद्र स्थापित किए जाने चाहिए, जो स्थानीय जैव विविधता और संरक्षण के महत्व के बारे मे ं जानकारी दें।

निष्कर्ष

राजस्थान में इको–टूरिज्म केवल एक आर्थिक गतिविधि नहीं है, बल्कि यह राज्य की अद्वितीय प्राकृतिक विरासत को बचाने का एक महत्वपूर्ण उपकरण है। यह संरक्षण और विकास के बीच एक संतुलन स्थापित करने का अवसर प्रदान करता है। राजस्थान सरकार की नई इको–टूरिज्म नीति एक सकारात्मक कदम है, लेकिन इसकी सफलता इसके जमीनी स्तर पर प्रभावी कार्यान्वयन पर निर्भर करती है। अति–पर्यटन, संसाधनों के दोहन और ग्रीनवॉशिंग जैसी चुनौतियों का समाधान किए बिना इको–टूरिज्म अपने वास्तविक लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता। यदि स्थानीय समुदायों को सशक्त किया जाए, प्राकृतिक संसाधनों का जिम्मेदारी से उपयोग किया जाए, और सख्त पर्यावरणीय दिशा–निर्देशों का पालन किया जाए, तो राजस्थान भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व के लिए इको–टूरिज्म का एक बेहतरीन मॉडल बन सकता है। भविष्य की पीढ़ियों के लिए इस मरुस्थलीय राज्य की जैव विविधता को सुरक्षित रखने के लिए सतत और जिम्मेदार पर्यटन ही एकमात्र रास्ता है।

संदर्भ

1. राजस्थान सरकार, वन विभाग. (2021). राजस्थान इको–टूरिज्म पॉलिसी 2021. जयपुर.
2. शर्मा, आर. और सिंह, पी. (2018). Wildlife Tourism and Conservation in Rajasthan. जर्नल ऑफ इकोटूरिज्म.
3. द इंटरनेशनल इकोटूरिज्म सोसाइटी (2015) – What is Ecotourism
4. विश्व पर्यटन संगठन (2020). Sustainable Tourism for Development
5. माथुर, ए. (2019). Impact of Tourism on Local Communities: A Case Study of Bishnois in Jodhpur. राजस्थान यूनिवर्सिटी प्रेस.
6. रामसर कन्वेंशन सचिवालय. (2013). The Ramsar List of Wetlands of International Importance: Keoladeo National Park.
7. पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार. (2022). Status of Tigers, Co-predators and Prey in India.

❑❑❑